आज की मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date: 24-09-14

आज भी भक्ति में जिसे पाने के लिए लाखों भक्त दर-दर भटकते हैं, वही परमात्मा शिव ने हम आत्माओं को कहा, मीठे बच्चे - यह राज सभी को सुनाओ कि आबू सबसे बड़ा तीर्थ है, क्योंकि स्वयं भगवान ने यहॉ से सभी आत्माओं की सद्गति की है.

भगवान ने आज सारी मुरली में हम आत्माओं को दो बातें विश्व की सर्व आत्माओं को सुनाने के लिए कहा है - १. आबू ही विश्व में सबसे बड़ा तीर्थ हैं. २. विश्व में जो भी शान्ति के लिए कोन्फरन्स आदि करते है, उन्हें समझावो की इस धरती पर शान्ति कब थी और वापस शान्ति कैसे स्थापन हो.

- हम गिनी-चुनी ब्राह्मण आत्माये तो जानती है की सारे विश्व में आबू ही सबसे बड़ा तीर्थ हैं क्योंकि स्वयं परमपिता-परमात्मा (भगवान, ईश्वर, गोड़, अल्लाह या जिहोवाह) खुद इस धरती पर आकर, इस समय हम आत्माओं (बच्चों) को ज्ञान देते है जिसे आत्माओं को सच्ची गति-सद्गति (मुक्ति-जीवनमुक्ति) प्राप्त होती हैं. लेकिन यह बात हम दूसरों को सुनावे और दूसरे हमारी बात माने इसके लिए हमारे में - स्वयं में और परमात्मा शिव में पुरा-पुरा निश्चय होना चाहिए. क्योंकि जितना पक्का हमें यह बात का निश्चय है उतना ही हम पुरुषार्थ करेंगे इस ईश्वरीय ज्ञान को स्वयं में धारण करने का. फिर जो आत्माये यह ईश्वरीय ज्ञान को धारण कर अनुभव मूर्त बने है वह आत्माये जब यह ज्ञान को दूसरों को सुनाते है और दूसरों को अनुभव करवाते है. इसके आधार से ही दूसरे सुनने वाले भी सुनाने वाले की बात को मानेंगे. इसलिए "आबू विश्व में सबसे बड़ा तीर्थ है" यह बात सबको मनाने के लिए इस ज्ञान को स्वयं में संपूर्ण धारण कर अनुभव की आथोरिटी बनना आवश्यक हैं क्योंकि अनुभव की आथोरिटी वाली आत्माये ही अन्य को भी अनुभव करवा सकती है जिसके आधार से अन्य भी माने की सच में इन्हें भगवान मिला हैं.

- जिस आत्माने बाबा के साथ योग में परमधाम का अनुभव किया हो उसी आत्मा को मालूम हैं कि वह स्थान जहॉ सब आत्माये अपने निज स्वरूप में, निज धर्म में स्थित रहती है वहॉ की शान्ति ही अलग हैं. वहॉ की शान्ति तो हम आत्माये सतयुग में भी अनुभव नहीं कर

सकेंगे. वह अनुभव तो अभी ही संगमयुग में, इस मानव देह में रहकर, बाबा के ज्ञान के आधार से, बाबा के साथ ऐक्युरेंट योग लगाकर ही प्राप्त कर सकते हैं.

आज बाबा ने हमें इस विश्व पर शान्ति कब थी और वापस कैसे स्थापन हो उस पर बताने को कहा हैं. यह तो हम सब जानते है की इस विश्व पर शान्ति सतयुग-त्रेतायुग में थी और उसका आधार है की वहॉ सर्व आत्माये सुखी रहती हैं क्योंकि वहॉ माया-रावण नहीं हैं. मतलब की कोई भी आत्मामें अंश-मात्र भी विकार नहीं हैं. तो किसी को भी हमें इस विश्व में शान्ति स्थापना के लिए लेक्चर देना हो तो कह सकते है की इस विश्व में शान्ति स्थापन करनी हो तो विश्व में सर्व आत्माओं को सुखी बनाना जरूरी हैं और सर्व आत्माये सुखी तब बन सकेंगी जब की सब आत्माये विकारों का त्याग करेंगी. उन्हें यह समझाना जरूरी है कि हम आत्माये दुखी हमारे में रहे विकारों से ही होती हैं या कहे मनुष्य आत्मामें रहे विकार ही मनुष्य आत्मा को दुखी करते हैं और दुखी आत्माये कभी शान्ति का अनुभव नहीं कर सकती.

जब वह माने की शान्ति का आधार सुख हैं और सुख का आधार निर्विकारी बनना हैं तभी उन्हें बाबा का परिचय देकर राजयोग का ज्ञान देने के लिए तैयार कर सकते हैं.

ॐ शान्ति.